टिप्पणी

8

भू-राजनीति

अंतरराष्ट्रीय सम्बन्ध किसी एक देश के दूसरे देशों के साथ सम्बन्धों का वर्णन करते हैं। दो देशों के बीच के सम्बन्ध अर्थव्यवस्था, सेना, कानून, पर्यावरण इत्यादि विषयों पर उनके आपसी व्यवहार के स्तर पर आधारित होते हैं। दो या उससे अधिक देशों के बीच रणनीतिक, आर्थिक, राजनीतिक, पारस्परिक और बहुआयामी सम्बन्ध हो सकते हैं।

आपसी सम्बन्धों का प्रकार देशों के आपसी सम्बन्धों और लाभों पर निर्भर करता है। दक्षिण एशिया के क्षेत्र में भारत की स्थिति केन्द्रीय है और भू-राजनीति इस क्षेत्र के देशों के बीच आपसी सम्बन्धों को निर्धारित करती है। भूमि, अवस्थिति, क्षेत्र एवं अन्य भौगोलिक कारकों ने राजनीतिक निर्णयों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। आप जानेंगे कि भौगोलिक कारण राजनीतिक निर्णय लेने को प्रभावित करते हैं। भारत के पड़ोसी देशों की अवस्थिति तथा उनकी सैन्य एवं सांस्कृतिक शक्ति को समझने के बाद, आप सभी देशों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाये जाने की आवश्यकता को समझ पाएंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद, आप :

- भू-राजनीति का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- भारत के पडोसियों को जान पाएंगे तथा देशों के शक्ति सामर्थ्य के बीच अन्तर पहचान सकेंगे;
- सन्धियों और गठबन्धनों के बीच अन्तर कर पाएंगे तथा उसके महत्व को जान सकेंगे;
- भारत और इसके पड़ोसियों के बीच सम्बन्धों के रणनीतिक क्षेत्रों का वर्णन कर सकेंगे;
- भारत की पंचशील और गुट निरपेक्ष नीति का वर्णन कर सकेंगे।

8.1 भू-राजनीति क्या है?

इससे पहले कि हम भारत के, अपने पड़ोसी देशों के साथ, सम्बन्धों पर चर्चा करें हमें भू-राजनीति और अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों के अर्थ को समझना चाहिए। पिछले अध्याय में हमने

भारत के भूगोल और प्राकृतिक संसाधनों के बारे में पढ़ा है। किसी देश की अवस्थिति निर्धारित करती है कि उस देश को अपनी रक्षा के लिए सेना के रूप में किस तरह तैयार रहना है। उदाहरण के लिए ग्रेट ब्रिटेन ने अपनी अवस्थिति का प्रयोग करके पड़ोसी देशों तथा दूर दराज के क्षेत्रों को समुद्रों पर नियन्त्रण के माध्यम से उपनिवेश बना कर प्रभावशाली ढंग से नियन्त्रित किया।

भारत के मामले में भी इसके भौगोलिक और प्राकृतिक संसाधनों ने इसके शक्ति सामर्थ्य को तथा इस शक्ति का प्रयोग करके पड़ोसी और दूर-दराज के देशों के साथ सम्बन्धों के निर्माण को निर्धारित किया। दूसरे शब्दों में जैसे राजनीति, शक्ति का अध्ययन है वैसे ही भू-राजनीति, देशों के बीच के सम्बन्धों पर भूगोल के प्रभावों का अध्ययन है।

8.2 भारत के पड़ोसी

भारत दक्षिण एशिया के केन्द्र में अवस्थित है और वह छोटे देशों से घिरा हुआ है। इस क्षेत्र के आकार के कारण हम इस को भारतीय उप-महाद्वीप कहते हैं।

इतिहास बताता है कि यह पूरा क्षेत्र भारत के प्रभाव में था। उदाहरण के लिए आज के पाकिस्तान और बंगलादेश भारत के ही अंग थे। इसी प्रकार दक्षिण एशिया क्षेत्र के अन्य देश जैसे नेपाल, भूटान, श्रीलंका, मालदीव कभी न कभी भारत के प्रभाव में रहे हैं। हालांकि ब्रिटिश का उपनिवेश बनने के बाद क्षेत्र के राजनीतिक और भौगोलिक लक्षणों में परिवर्तन हुए।

भारत की स्वतंत्रता से पाकिस्तान अलग हो गया है और 1971 में बंगलादेश बना। आज दक्षिण एशियाई क्षेत्र में आठ देश आते हैं। ये हैं : अफगानिस्तान, बंगलादेश, भूटान, म्यान्मार, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका और मालदीव। श्रीलंका और मालदीव के साथ भारत की समुद्री सीमाएँ लगती हैं। चीन की बहुत बड़ी सीमा भारत को स्पर्श करती है परन्तु भू-राजनीतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से चीन को दक्षिण एशिया का भाग नहीं माना जाता।

भारत की सबसे लम्बी सीमा बंगलादेश के साथ लगती है और सबसे कम अफगानिस्तान के साथ। भारत की 699 कि.मी. लम्बी सीमा भूटान के साथ 3323 कि.मी. (नियन्त्रण रेखा सहित) पाकिस्तान के साथ लगती है। भारत की सीमा गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू-कश्मीर राज्यों में पाकिस्तान को स्पर्श करती है। तिब्बत की सीमा भारत के जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, अरुणांचल प्रदेश और उत्तराखण्ड के साथ स्पर्श करती है।

8.2.1 भारत की शक्ति

सभी देशों के पास शक्ति के रूप में प्रयोग करने के लिए संसाधन हैं। अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों का अर्थ है कि किस प्रकार कोई एक देश किस दूसरे देश को अपना मनचाहा काम करवाने के लिए प्रभावित कर सकता है। किसी देश की शक्ति को उसकी सैन्य शक्ति और सांस्कृतिक शक्ति के रुप में परिभाषित किया जाता है। हाई पावर को सैन्य शक्ति कहते हैं तथा साफ्ट पावर का तात्पर्य है अर्थव्यवस्था और संस्कृति।

8.2.2. सांस्कृतिक शक्ति (साफ्ट पावर)

भारत के पास साफ्ट पावर के अनेक संसाधन हैं। यह अपनी साफ्ट पावर को बनाए रखने में गहरी रूचि रखता है। साफ्ट पावर में योग, भारतीय कलाओं, हस्त शिल्प, संगीत और सामान्य रूप से संस्कृति को बढ़ावा देना शामिल है। बालीवुड की फिल्में कई देशों में लोकप्रिय हैं। भारत की क्रिकेट और हाकी भी प्रसिद्ध है। संगीत से लेकर फुटबाल और व्यंजनों में विविधता ने पश्चिम को अपनी ओर आकर्षित किया है। भारत का विदेश मंत्रालय अपनी साफ्ट पावर का प्रयोग करने पर विशेष ध्यान दे रहा है।

भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद (ICCR) विभिन्न तरीकों से विदेशी सम्बन्धों को सुदृढ; करने में प्रमुख भूमिका निभाता रहा है। पर्यटन मंत्रालय एवं अन्य सरकारी एजेन्सियां भी भारत की साफ्ट पावर को प्रयोग करने मे लगी हुई हैं।

> *साफ्ट पावर, देश के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रभाव को प्रयोग करने को कहते हैं जिसका प्रयोग करके दूसरे देशों से सैन्य शक्ति का प्रयोग किए बिना मनचाहा काम करवाया जा सकता है।*

भारत अपनी सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक ताकत को विदेशों में विभिन्न माध्यमों के द्वारा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से दिखाता रहा है। अपने पड़ोस से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाने के लिए इसने विभिन्न अवसरों पर अपना सहयोग दिया है।

उदाहरण के लिए 2015 में नेपाल में आए भूकम्प के बाद भारत के गृह मंत्रालय ने सहायता करने के लिए भारतीय सेना के जवानों तथा राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन बल को भेजा था। इस कार्यवाही को 'मैत्री' नाम दिया गया था। भारतीय वायु सेना ने एडवान्सड लाईट हेलीकाप्टर्स MI-17 तथा अन्य जहाजों को राहत सामग्री पहुँचाने तथा बचाव कार्यों में सहायता देने के लिए प्रयोग किया। अफगानिस्तान को मानवीय सहायता और पुनर्निमाण में सहयोग देने वाला सबसे बड़ा क्षेत्रीय देश भारत है।

इसी प्रकार चक्रवात से पीड़ित श्रीलंका हो या बंगलादेश, भारत सरकार ने अपनी साफ्ट और हार्ड पावर का प्रयोग करके प्राकृतिक आपदा में फंसे लोगों को बचाने का काम किया तथा समय-समय पर राहत सामग्री भेजी। श्रीलंका में भारत की भूमिका से सभी परिचित हैं। श्रीलंका के गृह युद्ध के समय भारत ने शान्ति सेना भेजी तथा शरणर्थियों को आवास देने के लिए 50 हजार घरों का निर्माण किया।

इसके साथ ही पड़ोसी देशों में हिन्दुओं, इस्लाम और बौद्ध धर्म के प्रभाव को भी भूला नहीं जा सकता। स्वदेशी लोग हमारी साफ्ट पावर को सुदृढ़ करते हैं। श्रीलंका और सिंगापुर के तमिल भाषी तथा बंगलादेश के बांग्ला भाषी इस प्रभाव का अच्छा उदाहरण हैं। महात्मा गांधी एवं अन्य विचारकों के विचारों ने भी कई देशों को प्रेरित किया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियाँ अन्य देशों के मुकाबले बहुत अधिक हैं। भारत को अपने चन्द्रयान अभियान में काफी सफलता मिली है। भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन को पूरे विश्व में सराहा जाता है और इसके खाते में अनेक सफलताएं दर्ज हैं। भारत की साफ्ट पावर केवल भारत की विदेश नीति बनाने में सहायता करती है अपितु अन्य देशों की भी भारत के प्रति नीति बनाने में सहायता करती है।

पाठगत प्रश्न 8.1

1. भू-राजनीति से क्या अभिप्राय है?
2. भारत के पड़ोसी देशों के नाम लिखिए।
3. 'साफ्ट पावर' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
4. ऑपरेशन 'मैत्री' क्यों चलाया गया?

8.2.2 हार्ड पावर (सैन्य शक्ति)

अन्य देशों की राजनीतिक इकाईयों के व्यवहार अथवा हितों को प्रभावित करने के लिए सैन्य और आर्थिक साधनों का प्रयोग करना हार्ड पावर कहलाता है।

अन्य देशों के व्यवहार को प्रभावित और परिवर्तित करने के लिए सैन्य और आर्थिक साधनों के प्रयोग को हार्ड पावर कहते हैं।

हार्ड पावर प्राय: आक्रमक होती है और तब सबसे प्रभावशाली होती है जब इसे किसी राजनीतिक इकाई द्वारा कमजोर देश पर प्रयोग किया जाता है। भारत ने कई लड़ाईयाँ सफलतापूर्वक जीती हैं और कई सैन्य कार्यवाईयाँ भी की हैं। 1961 में आपरेशन 'विजय' के अन्तर्गत भारत ने गोवा, दमन और दियू को पुर्तगाल के शासन से मुक्त करवाया था। 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध में भारत ने पाकिस्तान के विरुद्ध 740 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था।

1971 में भारत ने बंगलादेश मुक्ति की लड़ाई को समर्थन दिया था। भारत ने लगभग 93 हजार पाकिस्तानी सैनिकों को बन्दी बना लिया था। भारत ने आपरेशन 'मेघदूत' द्वारा सियाचिन ग्लेशियर को पाकिस्तान के अवैध कब्जे से मुक्त कराया था। भारतीय सेना ने देश में नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में सफलतापूर्वक सामान्य वातावरण को पुन: स्थापित किया। 1985 में आपरेशन कैकट्स के माध्यम से मालदीव में 'सरकार का शासन' पुनर्स्थापित किया।

पाठगत प्रश्न 8.2

1. 'हार्ड पावर' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
2. DRDO का विस्तृत रूप लिखिए।

8.3 संन्धियाँ और गठबंधन

सन्धियों और गठबन्धनों का अभिप्राय देशों के बीच अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों से होता है। इनका अभिप्राय अच्छे और लाभकारी सम्बन्ध बनाने वाली विदेश नीति से है। भारत एक संप्रभु और स्वतंत्र देश के रूप में अपने पड़ोसी और दूर के देशों के साथ निरन्तर सहयोग करता रहा है। पड़ोसी सम्बन्धों को अच्छा बनाना अति महत्वपूर्ण है जो सन्धियों और गठबन्धनों के माध्यम से मजबूत किए जाते हैं। स्थायी शान्ति और विकास लाने के लिए यह कितने महत्वपूर्ण हैं और

टिप्पणी

इनका अर्थ क्या है? आइए, हम सन्धियों और गठबन्धनों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करें।

सन्धियाँ स्वतंत्र देशों के बीच लिखित समझौते होती हैं जो कानूनी तौर पर एक दूसरे पर बाध्यकारी होती हैं। उन्हें अनेक नामों से पुकारा जाता है जैसे अंतरराष्ट्रीय समझौते, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, अंतरराष्ट्रीय सन्धि, अन्तराष्ट्रीय पैक्ट और अंतरराष्ट्रीय सहमति इत्यादि। मूल रूप से सन्धियों के दो व्यापक वर्ग होते हैं-(1) द्विपक्षीय और (2) बहुपक्षीय। द्विपक्षीय सन्धियाँ दो देशों के बीच हस्ताक्षरित होती हैं जबकि बहुपक्षीय सन्धियां दो या उससे अधिक देशों के बीच हस्ताक्षरित होती हैं।

सभी सन्धियाँ कानूनी रूप से उन देशों पर बाध्यकारी होती हैं जिन्होंने उस पर हस्ताक्षर किए हों तथा सन्धि का सदस्य बनना स्वीकार किया हो। हालांकि गठबन्धन भिन्न होते हैं। ऐसे गठबन्धन आपसी लाभ और सुरक्षा के कारणों से बनाए जाते हैं। गठबन्धन कानूनी तौर पर बाध्यकारी नहीं होते।

द्विपक्षीय सन्धियों के उदाहरण :

1) भारत-श्रीलंका सहमति

2) भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधू नदी जल सन्धि

3) भारत-रूस मैत्री सन्धि

4) परमाणुवीय सहयोग पर भारत-अमरीका सन्धि

बहुपक्षीय सन्धियों के उदाहरण :

1) साऊथ एशियन एसोसिएशन फार रीजनल कॉआपरेशन (सार्क) दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन

2) एसोसिएशन आफ साऊथ ईस्ट एशियाई नेशन्स (आसियान)

विश्व संगठन :

1) संयुक्त राष्ट्र संघ

2) विश्व व्यापार संगठन

3) विश्व बैंक

8.3.1 सार्क और आसियान (ASEAN)

विकास के लक्ष्य को लेकर बहुपक्षीय सहयोग के माध्यम से बहुपक्षीय सन्धियाँ ऐसी रणनीतियाँ हैं जिन्हें विभिन्न देश दूसरे देशों के साथ सहयोग एवं सह-अस्तित्व की दृष्टि से अपनाते हैं। अपने प्रकार का पहला प्रयास दक्षिण एशियाई क्षेत्र में सार्क का गठन था। दूसरा प्रयास आसियान का गठन था। आसियान दक्षिण-पूर्वी एशिया के दस देशों का संगठन है। आइए, हम इन संगठनों के बारे में विस्तार से पढ़ें-

टिप्पणी

8.3.2 सार्क (दक्षेस) SAARC

सार्क अथवा दक्षेस (दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन) का गठन 8 दिसम्बर 1965 को बंगलादेश की राजधानी ढाका में हुआ था; जो एक आर्थिक और भू-राजनीतिक संगठन है। वर्तमान में आठ देश इसके सदस्य हैं। उनके नाम हैं-बंगला देश, भूटान, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका और भारत। अफगानिस्तान 2007 में सार्क का सदस्य बना।

सार्क का आधारभूत उद्देश्य दक्षिण एशियाई देशों के लोगों के लिए आर्थिक, सांस्कृतिक, तकनीकी, वैज्ञानिक और सुरक्षा सहित अन्य सभी सामान्य पक्षों पर सहयोग के माध्यम से कल्याण को विकसित करना था। यह क्षेत्र गरीबी और सुरक्षा की समस्या से ग्रस्त है। इसलिए समस्या के समाधान हेतु क्षेत्रीय स्तर पर बहुपक्षीय सहयोग के विचार को लागू किया गया। सदस्य देशों के विभिन्न बड़े शहरों में बारी-बारी से नियमित शिखर सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं।

सार्क में भारत ने केन्द्रीय भूमिका निभाई है। जैसा कि आप अगले अध्याय में जानेंगे कि दक्षिण एशिया के सभी देश भारत के धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव में रहे हैं। हालांकि समस्याओं को हल करने के लिए बहुपक्षीय स्तर पर सहयोग स्वागत योग्य कदम है परन्तु आपको यह भी समझना चाहिए कि ऐसे कदम हमेश सफल नहीं होते। कभी-कभी राजनीतिक और सुरक्षा के मुद्दे सहयोग को निष्फल कर देते हैं। उदाहरण के लिए विभाजन के बाद से ही पाकिस्तान द्वारा भारत के प्रति युद्ध का रवैया रखना सदस्य देशों के बीच विकास और बेहतर आर्थिक सहयोग प्राप्त करने की शक्ति को साकार करने में बाधक रहा है।

8.3.3 आसियान ASEAN

दक्षिण पूर्व एशिया भारत के पड़ोस में एक निकटतम क्षेत्र है जिसने सदियों तक भारत के धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभाव को देखा है। इस क्षेत्र के महत्व को अनुभव करते हुए तथा अपनी आर्थिक शक्ति को मजबूत करने के लिए भारत ने इस क्षेत्र के देशों के साथ निकट के सम्बन्ध बनाने की रणनीति को अपनाया है।

इस नीति को मूलत: 'पूर्व की ओर देखो' नीति कहा जाता था जिसे अब 'एक्ट ईस्ट पालिसी' (पूरब में काम करो नीति) कहा जाता है।

एसोसिएशन आफ साऊथ ईस्ट एशियन नेशन्स (ASEAN) का गठन 8 अगस्त 1967 को थाइलैण्ड के शहर बैंकाक में हुआ था। इसके संस्थापक सदस्य हैं-मलेशिया, सिंगापुर, इन्डोनेशिया, थाईलैण्ड और फिलीपीन्स। अब इसमें इस क्षेत्र के सभी दस देश लाओस, कम्बोडिया, म्यांमार, वियतनाम और ब्रुनी शामिल हैं।

इस क्षेत्रीय संगठन का उद्देश्य सहयोग के माध्यम से आर्थिक विकास को बढ़ावा देना तथा क्षेत्रीय शान्ति और सुरक्षा को बढ़ाना है। यद्यपि भारत आसियान का सदस्य नहीं है परन्तु 2002 से यह निरन्तर शिखर स्तरीय भागीदार रहा है और अब 2012 से आसियान का रणनीतिक भागीदार है। भारत आसियान देशों के साथ रणनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा के मुद्दों पर सहयोग

टिप्पणी

निर्मित कर रहा है और आसियान के लिए एक अलग राजनयिक मिशन भी स्थापित किया है।

पाठगत प्रश्न 8.3

1. 'सन्धि' शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
2. द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सन्धियों के दो-दो उदाहरण लिखिए।
3. सार्क और आसियान के सदस्यों के नाम लिखिए।

8.4 भारत और इसके पड़ोसियों के बीच के मुद्दे

भारत अपने पड़ोसियों के साथ मैत्रीपूर्ण सहयोग की नीति का अनुसरण करता है। हालांकि यह नीति बहुत कठिन रही है। गत दशक में अनेक बाधाएं आई जिन्होंने द्विपक्षीय सम्बन्धों को खराब किया। इस भाग में आप जानेंगे कि किस प्रकार राजनीतिक, राजनयिक, रक्षा और आर्थिक मुद्दों में यह सब घटित हुआ। पड़ोसी देशों के साथ हमारा राजनीतिक और राजनयिक सहयोग प्राय: मैत्रीपूर्ण रहा है। हालाँकि दो व्यक्तियों के बीच के सम्बन्धों की भांति देशों के बीच भी अन्तर उभर आते हैं। आइए हम प्रत्येक देश के साथ सम्बन्धों (मुद्दों) को परखें और मुद्दों को समझें।

8.4.1 बंगलादेश

1971 में भारतीय हस्तक्षेप के बाद बंगलादेश को पाकिस्तान से स्वतंत्रता प्राप्त हुई। उसके बाद से सभी मोर्चों पर आपसी सम्बन्ध मधुर रहे हैं क्योंकि दोनों के बीच सांस्कृतिक और भाषायी जुड़ाव रहा है। हालाँकि ऐसे मुद्दे भी हैं जिन्होंने आपसी सम्बन्धों को प्रभावित किया है। ये हैं-

- **बंगलादेश से अवैध घुसपैठ :** भारत के लिए घुसपैठिये आर्थिक, राजनीतिक और सुरक्षात्मक समस्या बन चुके हैं। आर्थिक रूप से इन लोगों को भोजन, आश्रय, चिकित्सा प्रदान करनी पड़ती है परन्तु सुरक्षा की दृष्टि से ये लोग भारत विरोधी गतिविधियों में लिप्त हो सकते हैं।
- **छिद्रात्मक सीमाएं :** छिद्रपूर्ण सीमा का अर्थ है कि सीमा पर बाड़ नहीं लगाई गई है और न ही फौज लगाई गई है। भारत की बंगला देश के साथ सबसे लम्बी सीमा है और इसमें से अधिकांश क्षेत्र नदियों का मैदानी क्षेत्र है। इसलिए उन पर बाड़ लगाना बहुत कठिन और अवैध तस्करी करना बहुत आसान है। भारत और बंगलादेश के बीच सीमा खुली होने के कारण सोना एवं अन्य चीजों की तस्करी होती है, जिससे सुरक्षा प्रभावित होती है।
- **आतंकवादी संगठन :** इन सीमावर्ती क्षेत्रों में हरकत-उल-जिहाद-उल-इस्लामी, जमाम-ए-इस्लाम जैसे संगठन सक्रिय हैं। मादक पदार्थ बेचने वाले बंगलादेश की सीमा को स्थानान्तरणीय स्थान की तरह प्रयोग करते हैं। वे बर्मा और अन्य देशों से बंगलादेश के रास्ते भारत में अफीम और हीरोइन की तस्करी करते हैं।

- सीमाई क्षेत्रों में बड़ी मात्रा में नकली भारतीय नोटों को भेजा जाता है।
- सिक्किम और पश्चिमी बंगाल के रास्ते बहने वाली तीस्ता नदी के पानी को आपस में सांझा करने पर अभी भी विवाद बना हुआ है।

8.4.2 पाकिस्तान

पाकिस्तान के लोगों के साथ हमारे ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भाषायी सम्बन्ध रहे हैं, फिर भी पाकिस्तान के साथ हमारे सम्बन्ध सहज और मैत्रीपूर्ण नहीं हैं। अनेक मुद्दों ने पड़ोसी सम्बन्धों को अच्छा नहीं होने दिया है। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

- **कश्मीर :** यह दोनों देशों के बीच बड़ा नाजुक मामला है। कश्मीर के महाराजा हरि सिंह के साथ भारत में विलय के बारे में एक राजनीतिक समझौता हुआ था परन्तु पाकिस्तान ने उसको स्वीकार नहीं किया और इस क्षेत्र में अस्थिरता पैदा करने तथा जबरदस्ती अपने में मिलाने के लिए उसने आक्रमणकर्ता भेजे। हमारी सेनाओं ने समय पर कार्यवाही करके उनको कब्जा करने से रोका। उस समय की कुछ राजनीतिक कार्रवाईयों के कारण कश्मीर का कुछ भाग आज भी पाकिस्तान के पास है और उसका कब्जा बना हुआ है। उन क्षेत्रों को पाक-अधिकृत कश्मीर कहते हैं। तब से भारत और पाकिस्तान के बीच तीन बड़ी और 1999 में कारगिल में एक छोटी लड़ाई हो चुकी है।
- **आतंकवाद :** दो देशों के बीच एक अन्य राजनीतिक मुद्दा 'आतंकवाद' है। 1947-48 के संघर्षपूर्ण कब्जा करने में असफल रहने के बाद पाकिस्तान ने भारत के विरुद्ध आतंकवाद को एक नीति के रूप में अपनाया है। पाकिस्तान की ओर से आतंकवादी घुसपैठ करके सरकारी संगठनों और सैनिकों पर हमले करने लगे। कश्मीर घाटी में अलगाववादी संगठन बनाए गए जिन्होंने आतंकवादियों की सहायता करना शुरू किया। एक देश की दूसरे देश के विरुद्ध इस प्रकार की कार्यवाही को छद्म युद्ध कहते हैं। यह एक मुख्य मुद्दा है जो दो देशों के बीच द्विपक्षीय, राजनीतिक और धार्मिक सम्बन्धों को प्रभावित कर रहा है।
- **छद्म युद्ध :** पाकिस्तान भारत को अस्थिर करने के लिए भारत विरोधी संगठनों विशेषत: कश्मीर के संगठनों को सहायता देकर छद्म युद्ध चला रहा है। इससे दोनों देशों के बीच राजनीतिक और सैनिक सम्बन्धों में तनाव पैदा हुआ है।

क्या आप जानते हैं

किसी देश द्वारा अपनी सेना को प्रत्यक्ष रूप से शामिल किए बिना विरोधी तत्वों और आतंकवादियों को हथियार, प्रशिक्षण और धन देकर सहायता करना, छद्म युद्ध कहलाता है।

टिप्पणी

8.4.3 म्यान्मार

भारत की म्यान्मार के साथ 1643 कि.मी. भू-सीमा और बंगाल की खाड़ी में सांझी सीमा है। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से पहले म्यान्मार में बड़ी संख्या में भारतीय रह रहे थे, जिसे तब बर्मा कहा जाता था। म्यान्मार में भारतीयों की उपस्थिति ने दोनों देशों के बीच सम्बन्धों को मजबूत किया। दोनों के बीच व्यापार बढ़ा है। म्यान्मार दक्षिण पूर्व एशिया का प्रवेश द्वार है। म्यान्मार इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि हमें उत्तर-पूर्व में विद्रोह से लड़ना है। हमारे सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले मुद्दे इस प्रकार हैं-

- सीमा पर बाड़ नहीं है अत: म्यांमार और उत्तर-पूर्व के विद्रोही एक गम्भीर सुरक्षा समस्या बन चुके हैं। भारत में नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम के हथियारबन्द विद्रोही म्यान्मार को सुरक्षित स्थान समझते हैं।
- अवैध घुसपैठ की समस्या: म्यान्मार में रोहंग्या मुसलमान अपने पर होने वाली हिंसा से बचने के लिए अवैध रूप से भारत में घुस आते हैं।

8.4.4 नेपाल

नेपाल के साथ भी भारत की सांझी सीमा है और 1950 में दोनों ने मैत्री सन्धि पर हस्ताक्षर किए थे। इसने हर क्षेत्र में द्विपक्षीय सम्बन्धों को बढ़ते हुए देखा है। हिमालय क्षेत्र में तिब्बत की सीमा के साथ नेपाल रणनीतिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण स्थान पर अवस्थित है इसलिए भारत को निकट और अच्छे सम्बन्धों की ज़रुरत है। नीचे कुछ ऐसे मुद्दे दिए गए हैं जिनसे हमारे सम्बन्धों की प्रगति प्रभावित हुई है।

- नेपाल चारों ओर से भूमि से घिरा एक देश है और समुद्री बन्दरगाहों तक इसकी पहुंच भारत के रास्ते से है। इससे कभी-कभी तलखी पैदा होती है।
- मदेशी जनसंख्या का मुद्दा भी दोनों के बीच संघर्ष का कारण है।
- मानव व्यापार का मुद्दा : भारत में हजारों नेपालियों को अवैध रूप से खरीद कर लाया गया माना जाता है।

क्या आप जानते हैं

मानव व्यापार का अर्थ है ''किसी देश से लोगों को दूसरे देश में बलात श्रम अथवा शोषण के लिए अवैध रूप से ले जाना।''

8.4.5 श्रीलंका

श्रीलंका के लिए भारत एकमात्र समुद्री पड़ोसी है और आमतौर पर दोनों के बीच अच्छे पड़ोसियों जैसे सम्बन्ध रहे हैं। भारत ने लिट्टे द्वारा उत्पन्न आन्तरिक सुरक्षा समस्या सुलझाने में श्रीलंका की सहायता की थी। भारत ने श्रीलंका में स्थिरता और शान्ति बनाए रखने के लिए अपनी शान्ति सेना को भेजा। भारत श्रीलंका को वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति करके उसका

आर्थिक सहभागी रहा है। भारत ने आर्थिक और मुक्त व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं और आपसी सम्बन्धों को बढ़ावा दिया है। सुरक्षा और रक्षा के मामलों में भी भारत ने श्रीलंका की सैन्य हथियारों और प्रशिक्षण के माध्यम से सहायता की है। लेकिन फिर भी कुछ मुद्दे ऐसे रहे हैं, जिन्होंने सम्बन्धों को प्रभावित किया है। ये हैं-

- तमिलनाडु के मछुआरों द्वारा 'पल्क समुद्र सन्धि' पार कर के श्रीलंका के समुद्र में मछली पकड़ने के लिए जाना।
- भारत और श्रीलंका के बीच स्थित कच्चतिवु द्वीप भारत ने श्रीलंका को दे दिया और यह एक विवाद का विषय बन गया।
- श्रीलंका में चीन का नौसेना बेस तथा चीन द्वारा बन्दरगाह की सुविधाओं का निर्माण करना। यह विषय रणनीतिक और सुरक्षात्मक चिन्ता का विषय है क्योंकि इससे चीन के युद्ध पोत वहाँ आसानी से आ जा सकेंगे।

8.4.6 मालदीव

मालदीव हिन्द महासागर में भू-रणनीतिक महत्व के क्षेत्र में स्थित है। दक्षिण एशियाई क्षेत्र में यह सबसे छोटा देश है। अन्य पड़ोसी देशों की भाँति भारत के मालदीव के साथ भी अच्छे सम्बन्ध रहे हैं। भारत मालदीव के विकास में सहभागी और सभी क्षेत्रों में सहायक रहा है विशेषत: व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में क्षमता निर्माण करने में। भारत ने मालदीव की सुरक्षा की ज़रूरतों में भी सहायता की है और रक्षा सहयोग के समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। लेकिन मालदीव द्वारा भारत के सुरक्षा चिन्ताओं की कीमत पर चीन के साथ निकट के सम्बन्ध बनाने से आपसी सम्बन्ध खराब हुए हैं। मालदीव ने पहली बार चीन के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। लेकिन मालदीव में सरकार बदलने के साथ भारत की व्यापार पर पहली नीति लौट आई है।

पाठगत प्रश्न 8.4

1. खुली सीमा (छिद्रात्मक सीमा) से क्या अभिप्राय है?
2. स्वतंत्रता के समय काश्मीर के शासक का नाम लिखिए।
3. छद्म-युद्ध का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
4. मालदीव कहाँ अवस्थित है?
5. भारत और श्रीलंका के बीच की किन्हीं दो समस्याओं का उल्लेख कीजिए।
6. मानव व्यापार का क्या अर्थ है? स्पष्ट कीजिए।

8.5 पंचशील और भारत की गुट निरपेक्ष नीति : एक विहंगम दृष्टि

पंचशील को शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के पाँच सिद्धान्त भी कहते हैं। ये सिद्धान्त भारत के अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों और दूसरे देशों के साथ सम्बन्धों में मार्गदर्शक सिद्धान्त बन गए हैं।

वस्तुत: यह स्वतंत्र भारत का चीन के प्रति विदेश नीति का प्रथम प्रयास था जब दोनों देशों ने 29 अप्रैल 1954 को तिब्बत स्वायत क्षेत्र पर बातचीत तथा व्यापार के एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।

समझौते की प्रस्तावना में निम्नलिखित पाँच सिद्धान्त थे-

1. प्रत्येक देश की क्षेत्रीय अखंण्डता और संप्रभुता का परस्पर सम्मान करना
2. परस्पर आक्रमण न करना
3. परस्पर अहस्तक्षेप
4. समानता और आपसी लाभ तथा
5. शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व

8.5.1 पाँच सिद्धान्तों (पंचशील) का प्रभाव

पंचशील के सिद्धान्तों ने न केवल भारत और चीन के बीच पारस्परिक सम्बन्धों की नीति के रूप में काम किया अपितु अन्य देशों के साथ सम्बन्धों के एक ढाँचे के रूप में भी विकसित हुए। समय के साथ इन सिद्धान्तों को गुट निरपेक्ष आन्दोलन में शामिल किया गया जो 1961 में तब उभर कर आया जब औपनिवेशिक शासन बिखर गया और कई एशियाई और अफ्रीकी देशों को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। इस आन्दोलन को भारत ने मिश्र, घाना, युगोस्लाविया और इन्डोनेशिया के साथ आगे बढ़ाया, जिन्हें गुट निरपेक्ष आन्दोलन का संस्थापक कहा जाता है। यह पाँच सिद्धान्त आन्दोलन के लिए महत्वपूर्ण नीति बन गए जिसका उद्देश्य विश्व में शान्ति और सुरक्षा को स्थापित करना था।

आपने क्या सीखा

- भू-राजनीति का अर्थ दो देशों के बीच के सम्बन्धों पर भूगोल के होने वाले प्रभाव हैं। भारत केन्द्र में स्थित है और नेपाल, भूटान, श्रीलंका, पाकिस्तान, बंगलादेश, मालदीव और म्यांमार से घिरा हुआ है।
- हार्ड पावर को सैन्य शक्ति कहते हैं तथा साफ्ट पावर आर्थिक और सांस्कृतिक शक्ति को कहते हैं। भारत के पास साफ्ट पावर संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला है-जैसे योग, संगीत, शास्त्रीय नृत्य, क्रिकेट, हाकी और विभिन्न व्यंजन। हार्ड पावर के मामले में हमारी थल सेना, वायु सेना और नौ सेना का चारों तरफ के देशों के साथ कोई मुकाबला नहीं है।
- सन्धियों और गठबन्धनों का अभिप्राय देशों की बीच अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों से है। भारत भी कई सन्धियों के अनुपालन के लिए प्रतिबद्ध है-जैसे भारत-श्रीलंका समझौता, भारत रूस मैत्री सन्धि, आणविक सहयोग पर भारत-अमरीका सन्धि। यद्यपि भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ अच्छे सम्बन्धों को प्राथमिकता देता है परन्तु विभिन्न समस्याएं इन

सम्बन्धों को प्रभावित करती हैं। भारत के लिए काश्मीर, आतंकवाद और कई युद्धों के कारण पाकिस्तान एक सिरदर्द बना हुआ है। श्रीलंका में भी भारतीय तमिलों की समस्या ने अच्छे सम्बन्धों को प्रभावित किया है।

- भारत पंचशील के सिद्धान्तों और गुट निरपेक्षता की नीति का अनुसरण करता रहा है।
- इनमें से प्रत्येक भिन्न प्रकार का देश है और उसके साथ भिन्न प्रकार की राजनैतिक, राजनयिक और सैन्य रणनीति के अनुसार व्यवहार करने की ज़रुरत है।

पाठान्त प्रश्न

1. भू-राजनीति किस प्रकार निर्णय निर्माण को प्रभावित करती है?
2. साफ्ट और हार्ड पावर का क्या अर्थ है?
3. भारत के पड़ोसी देशों के नाम लिखिए।
4. पंचशील के सिद्धान्त लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1 1. भू-राजनीति देशों की बीच भूगोल के प्रभावों के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

2. अफगानिस्तान, बंगला देश, भूटान, म्यान्मार, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका और मालदीव।

3. साफ्ट पावर भारत के सांस्कृतिक मूल्य और परम्पराएँ हैं जिनमें योग, भारतीय कलाएँ, हस्तशिल्प, संगीत और संस्कृति शामिल हैं।

4. भारत ने मित्रता के भाव से 2015 में नेपाल में आए भूकम्प में मानवीय आधार पर बहुत सहायता प्रदान की थी।

8.2 1. अन्य देशों अथवा राजनीतिक इकाईयों के व्यवहारों और हितों को प्रभावित करने के लिए सैन्य और आर्थिक साधनों का प्रयोग करना।

2. डिफेन्स रिसर्च एण्ड डेवेल्पमेण्ट ऑर्गेनाइजेशन

8.3 1. सन्धियाँ स्वतंत्र देशों के बीच लिखित समझौते होती हैं जो कानूनी रूप से एक दूसरे पर बाध्यकारी होते हैं।

2. द्विपक्षीय सन्धि के उदाहरण हैं-भारत श्रीलंका समझौता, भारत और पाकिस्तान के बीच सिन्धु नदी जल सन्धि। बहुपक्षीय सन्धियों के उदाहरण हैं-दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन और आसियान

टिप्पणी

3. सार्क (दक्षेस) के सदस्य हैं-बंगला देश, भूटान, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, भारत और अफगानिस्तान। आसियान के सदस्य हैं-मलेशिया, सिंगापुर, इन्डोनेशिया, थाइलैण्ड, फिलीपीन्स, लाओस, वियतनाम और ब्रुनो।

8.4 1. जिन देशों की सीमाओं के बीच बाड़ नहीं लगी होती उन्हें छिद्रात्मक सीमा कहते हैं।

2. महाराजा हरी सिंह।

3. किसी देश द्वारा प्रत्यक्ष तौर पर अपनी सेना को शामिल न करके विद्रोहियों और आतंकवादियों की हथियारों, प्रशिक्षण और धन से सहायता करना।

4. भारतीय हिन्द महासागर में भू-रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र

5. तमिल मछुआरों द्वारा 'पल्क जल सन्धि' को पार कर जाने का मामला तथा कच्चतिवू द्वीप का स्वामित्व

6. बलात मज़दूरी अथवा शोषण के लिए एक देश से अवैध रूप से दूसरे देशों में लोगों को भेजने का काम